खाद्य प्रसंस्करण से महिला सशक्तिकरण

मोहन लाल जाट*, जितेन्द्र सिंह शिवरान** और **राकेश कुमार जाट*****

"खाद्य प्रसंस्करण प्रशिक्षण के माध्यम से कृषक महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को बढ़ाने और टिकाऊ कृषि प्रथाओं को बढ़ावा देने की अपार संभावनाएं हैं। यह लेख ऐसे सशक्तिकरण पहलों के पीछे के वैज्ञानिक तर्क की पड़ताल करता है, जो व्यक्तियों और समुदायों दोनों को प्रदान किए जाने वाले बहुमुखी लाभों पर जोर देता है। इसमें लैंगिक समानता को बढ़ावा देने, खाद्य सुरक्षा में सुधार, पोषण संबंधी परिणामों और ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में खाद्य प्रसंस्करण प्रशिक्षण की भूमिका पर चर्चा की गई है। इसके अतिरिक्त, यह लेख इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावी और स्थिरता को अधिकतम करने के लिए वैज्ञानिक ज्ञान और तकनीकी नवाचारों को एकीकृत करने के महत्व पर भी प्रकाश डालता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, यह लेख व्यापक विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में कृषि और खाद्य प्रसंस्करण में किसान महिलाओं को सशक्त बनाने के महत्व को रेखांकित करता है।"

भारत में अधिकांश महिलाएं खेती से जुड़ी हुई हैं। इनकी आमदनी का स्रोत भी खेती से ही चलता है। महंगाई के इस दौर में सिर्फ खेती से ही गुजारा करना आसान नहीं है। इसके लिए कृषक महिलाओं को खेती के अतिरिक्त अन्य व्यवसाय भी करने होंगे, ताकि वे अधिक आय का सृजन कर आर्थिक रूप से सशक्त बन सकें। कृषि के अतिरिक्त यदि व्यावसायिक कार्यों की बात करें, तो अधिकतर महिलाएं खाद्य प्रसंस्करण में पारंगत होती हैं और घर पर ही विभिन्न खाद्य उत्पादों को बना लेती हैं। इन परंपरागत खाद्य उत्पादों की बाजार में मांग अधिक होने के कारण इन्हें व्यावसायिक रूप दिया जा सकता है। विभिन्न खाद्य प्रसंस्करण उत्पादों को तैयार करने वाली निजी कम्पनियां तमाम तरह के प्रसंस्करित खाद्य उत्पादों को व्यावसायिक रूप से तैयार कर बाजार की मांग के अनुसार अच्छे-खासे मुनाफे में बेचती हैं।

प्रसंस्करण के माध्यम से बड़ी संख्या में रोजगार के अवसरों का सृजन किया जा

*विद्यावाचस्पति शोध छात्र, उद्यान विज्ञान विभाग, चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार-125004 (हरियाणा); **विद्यावाचस्पति शोध छात्र, उद्यान विज्ञान विभाग, गो.व. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर-263145 (उत्तराखंड); ***सह आचार्य, उद्यान विज्ञान विभाग, श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर-303329 (राजस्थान)

रहा है। देश के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में होटल और रेस्त्रां आदि के व्यवसाय का फैलाव हो रहा है। इन क्षेत्रों में रोजगार के अवसर उपलब्ध हो रहे हैं। कृषक महिलाएं खाद्य प्रसंस्करण के क्षेत्र में समूह के माध्यम से या स्वयं अपना व्यवसाय स्थापित कर सकती हैं। खाद्य प्रसंस्करण का कार्य कुछ घरेलू उत्पादों जैसे-अचार, पापड़, सूखी सब्जियों, चिप्स, कैचअप आदि को तैयार करके किया जा सकता है।

विविध प्रसंस्करण कार्य

मसाला प्रसंस्करण

मसालों का प्रसंस्करण वर्तमान समय में सर्वाधिक प्रचलित एवं लाभ देने वाला व्यवसाय है। इसके साथ ही यह कृषक महिलाओं के लिए कम समय में अधिक लाभदायक कार्य भी है। मसालों का व्यवसाय काफी बड़े स्तर पर किया जा रहा है। होटल या बड़े रेस्त्रां में स्वादिष्ट आहार बनाने के लिए इनकी आवश्यकता होती है।

सामान्यत: मसाले पिसाई करके उपयोग किए जाते हैं। साबुत मसाले उपलब्ध होने के कारण सीधे उनका प्रयोग करना कठिन है। इस वजह से मसालों के प्रसंस्करण से तैयार उत्पादों की मांग बढ़ रही है। प्रोसेसिंग के अंतर्गत मसालों की विभिन्न मात्रा को सही अनुपात में मिलाकर पिसाई करके पैकिंग की जाती है। इस प्रकार खड़े मसालों को पैकिंग करके लघु व्यवसाय के लिए अपना सकते हैं। इसके साथ राज्य एवं केन्द्र सरकार द्वारा सब्सिडी प्राप्त करके इनका व्यवसाय स्थापित कर सकते हैं।

मसालों के माध्यम से उद्यमिता

बाजार खाद्य प्रसंस्करित उत्पाद

वर्तमान में संपूर्ण बाजार खाद्य प्रसंस्करित उत्पादों पर आधारित है। लोगों की बढ़ती हुई व्यस्तता के कारण सब प्रसंस्करित उत्पादों को खरीदने पर मजबूर हो रहे हैं। इसलिए बाजार में प्रसंस्करण से तैयार उत्पादों की अधिक मांग है। बाजार में यदि देखें, तो खाद्य प्रसंस्करित उत्पाद बड़े स्तर पर उपलब्ध हैं। पहले की तुलना में वर्तमान में प्रसंस्करित उत्पादों को तैयार करने वाली अधिक कम्पनियां स्थापित हो रही हैं। ये निजी कम्पनियां लोगों को रोजगार भी दे रही हैं। कृषक महिलाएं, कृषि कार्य के साथ कुछ समय निकालकर महिला समूह के माध्यम से प्रसंस्करित उत्पादों को तैयार करने में कार्य कर रही हैं। इस प्रकार रोजगार के साधन सृजित हो रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में महिला समूह द्वारा अनाज, मसाले, फल एवं सब्जियों को प्रसंस्करण के क्षेत्र में रोजगार स्थापित हो रहे हैं। वर्तमान में प्रसंस्करित उत्पादों का उपभोग शहरों से लेकर ग्रामीण क्षेत्रों तक बढ़ रहा है। खाने की वस्तु हो या पहनने के वस्त्र हों सभी क्षेत्रों में प्रसंस्करण की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। सभी वर्ग के लोग प्रसंस्करित उत्पादों को पसंद करते हैं। यह आय में बढ़ोतरी होने का साधन भी बनता है।

महिलाएं, फल एवं सब्जियों के प्रसंस्करित उत्पादों जैसे-अचार, जैम, जैली, कैचअप, निर्जलीकृत सब्जियां, हिमीकृत और सब्जियों को पाउडर के रूप में तैयार करके बाजार में विक्रय कर सकती हैं। वर्तमान में बाजार ऐसे प्रसंस्करित उत्पादों पर निर्भर है। समय की कमी एवं बढ़ती हुई खाद्य उत्पादों की मांग के आधार पर बाजार में खाद्य प्रसंस्करण से तैयार उत्पादों की मांग तेजी से बढ़ रही है। बाजार की मांग के अनुसार महिलाएं अनाज एवं दालों के प्रसंस्करित उत्पाद जैसे-दाल, बेसन, मल्टीग्रेन आटा, बिस्कुट, सोया आटा एवं श्रीअन्न जैसे-ज्वार, बाजरा, मक्का एवं रागी से तैयार आटा केक और कुकिज जैसे खाद्य प्रदार्थ तैयार करके आसानी से बाजार में बेच सकती हैं। महिलाओं को खाद्य प्रसंस्करण से रोजगार उपलब्ध करवाने के लिए भारत सरकार, प्रधानमंत्री कौशल विकास एवं कौशल्या योजना के तहत कृषिरत एवं गैर

ग्रामीण महिलाओं द्वारा आम के गूदे का प्रसंस्करण

कृषित महिलाओं को प्रशिक्षण प्रदान करके उनके कौशल के ज्ञान के द्वार को खोलने में प्रयासरत है। इसके साथ ही योजना के तहत लघु उद्योग स्थापित करने के लिए आर्थिक रूप से अनुदान भी प्रदान किया जाता है।

कार्यक्रम एवं प्रशिक्षण

खाद्य प्रसंस्करण हेतु प्रायोगिक प्रशिक्षण

इसमें खाद्य प्रसंस्करण का प्रयोगिक प्रशिक्षण खाद्य सुरक्षा एवं खाद्य संबंधित उद्योगों में रुचि रखने वाली महिलाओं के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है। यह प्रशिक्षण खाद्य संबंधित प्रक्रियाओं, तकनीकों और मानकों को समझने में मदद कर सकता है। ये खाद्य सामग्री को उत्पन्न करने एवं पैकेजिंग करने में शामिल होते हैं। इस प्रशिक्षण के अन्तर्गत कई विषय शामिल हो सकते हैं।

खाद्य सुरक्षा और गुणवत्ता

खाद्य सुरक्षा के नियमों और मानकों का अध्ययन, खाद्य संरक्षण और गुणवत्ता की नियंत्रण प्रक्रियाएं सीखना शामिल हैं।

खाद्य प्रसंस्करण की तकनीक

खाद्य प्रसंस्करण की विभिन्न तकनीकों जैसे-रबड़ी, ठंडाई आदि अन्य प्रक्रियाएं सीखना शामिल हैं।

खाद्य सुरक्षा के उपाय

इसके अन्तर्गत खाद्य सुरक्षा के उपायों का अध्ययन किया जाता है जैसे-पैकेजिंग, भण्डारण और परिवहन आदि।

प्रशिक्षण के लिए आयोजित कार्यक्रम

देश के विभिन्न हिस्सों में स्थित कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा कृषक महिलाओं को आर्थिक व सामाजिक सशक्तिकरण के लिए अलग-अलग प्रकार से प्रयास किये जा रहे हैं। इनमें से खाद्य प्रसंस्करण का क्षेत्र प्रमुख है। वर्तमान में खाद्य प्रसंस्करण देश के प्रमुख उद्योगों में से एक है। यह उद्योग, देश को सफलता की ओर अग्रसर कर रहा है।

इस दौरान कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा कृषक महिलाओं को विभिन्न गतिविधियों के बारे में बताया जाता है। महंगाई के कारण कृषक महिलाओं को विभिन्न परिस्थतियों का सामना करना पड़ता है। ये महिलाएं खेतों से संबंधित विभिन्न गतिविधियां जैसे-खेतों में कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए खाद्य प्रसंस्करित श्रम, निराई-गुड़ाई सफाई, पौधशाला आधारित विभिन्न प्रायोगिक प्रशिक्षण देकर संबंधित क्षेत्र में कार्य करने की तैयारी, खेतों में रोपाई, अनाजों की सफाई, खाद एवं उर्वरक मिलाना आदि कार्य करती हैं। इसके साथ ही समूह के माध्यम से कृषक महिलाओं को जोड़कर व्यवसाय करने की सलाह व सहयोग दिया जाता है। ■

दुग्ध प्रसंस्करण

वर्तमान में ग्रामीण क्षेत्रों में दूध की कमी नहीं है। प्रत्येक घर में मवेशी उपलब्ध हैं, जिनकी उत्पादन क्षमता उपयोग से अधिक है। दूध की प्रकृति शीघ्र खराब होने के कारण संग्रहण करना थोड़ा कठिन कार्य है। गांव में दूध के संग्रहण की व्यवस्था पर्याप्त न होने एवं उपलब्धता अधिक होने के कारण क्षेत्रीय स्तर पर ब्रिकी न हो पाना एक गंभीर समस्या है। दूध से विभिन्न प्रसंस्करित उत्पाद तैयार किये जा सकते हैं। इसके लिए गांव के स्तर पर दूध का प्रसंस्करण होना अति आवश्यक है। दूध के प्रसंस्करित उत्पादों का मूल्य अधिक होने के कारण मुनाफा ज्यादा होता है। महिलाएं ग्रामीण स्तर पर दूध से पनीर, दही, लस्सी, मक्खन आदि बनाकर बाजार में आसानी से बेच सकती हैं। दूध की ब्रिकी भले ही क्षेत्रीय स्तर पर अधिक न हो, परन्तु इनसे तैयार प्रसंस्करित उत्पादों की बिक्री अधिक होती है।

महिलाओं को सरकारी योजना के तहत छोटे व्यवसाय का अवसर प्राप्त होना